शिक्षण और साहित्य-साधना की प्रेरक पहचान बनीं रूचिका

सिवान। राजकीय प्राथमिक विद्यालय, कुरमौली (गुठनी) की प्रधान शिक्षिका एवं चर्चित कवयित्री रूचिका शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय योगदान से प्रेरणा का स्रोत बनी हुई हैं। हिंदी में स्नातकोत्तर एवं बी.एड. शिक्षित रूचिका विद्यालय में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, संस्कार और अनुशासन का पाठ पढ़ाने के साथ-साथ साहित्य के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को भी अभिव्यक्ति दे रही हैं। उनके दो चर्चित काव्य संग्रह स्वपीड़ा से स्वप्रेम तक तथा तितिक्षा : भावों का इंद्रधनुष पाठकों द्वारा सराहे गए हैं। इसके अलावा वे अनेक साझा काव्य संकलनों से जुड़ी रही हैं तथा साहित्यिक संपादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुकी हैं। शैक्षणिक एवं साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। सादगी, विनम्रता और सेवा-भाव से परिपूर्ण रूचिका जी का मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि एक संस्कारित, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक का निर्माण करना है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से आज अनेक विद्यार्थी, शिक्षक और साहित्यप्रेमी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। **रिपोर्ट -कुमार संदीप**

वागीश्वरी काव्य निर्झरिणी की वेबसाइट पोर्टल का शुभारंभ

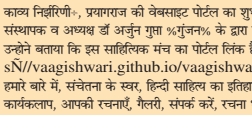

रविवार दिनांक 12 जुलाई 2026 प्रातः 11 बजे से +वागीश्वरी काव्य निर्झरिणी+, प्रयागराज की वेबसाइट पोर्टल का शुभारंभ इसके संस्थापक व अध्यक्ष डॉ अर्जुन गुप्ता %गुंजन% के द्वारा किया गया। उन्होने बताया कि इस साहित्यिक मंच का पोर्टल लिंक है:- https-sN//vaagishwari.github.io/vaagishwari/ यहाँ हमारे बारे में, संचेतना के स्वर, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रमुख कार्यकलाप, आपकी रचनाएँ, गैलरी, संपर्क करें, रचना भेजें इत्यादि की संपूर्ण जानकारी एक ही स्थान (वेबसाइट) पर मिलेगी। उन्होंने सभी साहित्य-प्रेमियों से अनुरोध करते हुए कहा कि इस साहित्यिक वेबसाइट पोर्टल से जुड़कर सभी साहित्य की निर्झरिणी में गोते लगाएँ तथा निःशुल्क साहित्य का लाभ उठाएँ। इस साहित्यिक मंच के सभी पदाधिकारियों ने तथा इस समूह के सभी सदस्यों ने बधाई तथा शुभकामनाएँ प्रेषित किया है। अन्य गणमान्य सुधी साहित्य साधकों तथा मनीषियों ने इसे एक अच्छी पहल बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त किया है तथा इस पोर्टल की सफलता की कामना की है।

तू ही फंसा, तू ही बचा

सुरेन्द्र की पत्नी का नाम सुचित्रा था. वह उसे प्यार से चित्रा ही कहते थे. सुबह दस बजे मोबाइल पर मिली सूचना के बाद वह तुरंत आई.सी.यू. में प्रविष्ट हुए. वहां उपस्थित तीन डॉक्टर जो निश्चय ही रात वाले नहीं थे. उनका इंतजार कर रहे थे और मरीज को देखने के बाद चर्चा उपरांत किसी निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे. सुरेन्द्र ने जब अपना परिचय दिया तो उनमें से एक तुरंत बोलने लगे-

देखिए हम अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहे हैं पर अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी. दो तीन दिन देखते हैं कि मरीज की हालत में कितना सुधार होता है. मरीज की हालत स्थिर हो जाये तो उसके बाद सुधार की उम्मीद की जा सकती है. इन्हें फेक्चर भी बहुत हैं पर उनका अभी कुछ नहीं किया जा सकता. सुरेन्द्र पढ़े लिखे थे बोले-हां मल्टीपल रिब फेक्चर है .लेट हैंड के स्केपुला में फेक्चर है. ल्यूम्बर वरटीब्रा और डोर्सल बर्टीब्रा डी या डी.फोर भी इफेक्टेड है. लेकिन जो लंग्स इन्जरी है उसका क्या होगा? जो डॉक्टर उन्हें समझा रहा था ,थोड़ा अचंभित हुआ. सामान्यतः वह मरीज के परिजनों को चलताऊ भाषा में बता देते हैं और मरीज के परिजन अटेंडर से इस तरह का जवाब मिलने की उम्मीद नहीं रखते. उनकी समझ व ज्ञान से प्रभावित होकर उन्होंने विस्तार से बताना शुरू कर दिया- मरीज के फेफड़ों को बहुत नुकसान हुआ है. पसलियों के फ्रेक्चर ने फेफड़ों की झिल्ली जिसे प्लुरा कहते हैं, क्षतिग्रस्त कर दिया है. वहां से निरंतर द्रवीय उत्सर्जन हो रहा है और उसी झिल्ली में इकट्ठा होता जा रहा है जिससे सांस लेने में कठिनाई हो रही है. उसे निकालने के लिए हमने दोनों ओर नलियां डाल दी हैं. लंग्स की हीलिंग या रिपयेरिंग नैसर्गिक ढंग से ही होगी उसके लिए कुछ नहीं किया जा सकता .मेडीकल साइंस के मुताबिक हम सिस्टम को केवल सपोर्ट करते हैं और शरीर अपनी हीलिंग प्रोसेस को अपने ढंग से आगे बढ़ाता है. आप परेशान न हों. अगले दो तीन दिन पेशेंट को वाच करते हैं. जो भी हो सकता है हम कर रहे हैं. आप चिंता न करें. आपको कुछ पूछना है- सुरेन्द्र का पहला सवाल-सर कितने दिन लग सकते हैं. प्रत्युत्तर में डॉक्टर साहब हल्के से मुस्कुराये- देखो,ये कहना बड़ा कठिन है और सच तो यह है कि इस समय कुछ भी कहना कठिन है.आप थोड़ा समय दें. जरुरत होगी तो हम आपके बुला लेंगे. आपका मोबाइल नम्बर यहां फाइल में है. सीधे सीधे बाहर जाने की बात समझ कर सुरेन्द्र ने सिर हिलाया और बाहर निकल आए.इससे आगे कोई भी तर्क वितर्क शिष्टाचार की सीमा से परे होता.

बड़े-बड़े शहरों के बड़े बड़े प्रतिष्ठित निजी चिकित्सालयों में जो होता है ,उन्हीं परिस्थितियों से गुजरते हुए सुरेन्द्र अपने बेटे के साथ सुबह शाम आई.सी.यू. में अपनी पत्नी को बिस्तर पर पड़े देखते हुए अपना समय व्यतीत करते रहे. उस शहर में उनके परिचितों की कोई कमी नहीं थी पर उन्होंने किसी से संपर्क करना उचित न समझा.लोक कथाओं की तरह महानगरों के प्रतिष्ठित निजी चिकित्सालयों के अनेक किस्से उन्होंने सुने थे जिनमें मरीज की मृत्यु हो जाने के बाद भी उसे वेंटीलेटर पर लिटाये रखते हैं ताकि उनका बिल बढ़ता रहे.कई बार तो बिल भुगतान न होने तक परिजनों को मरीज का शव भी नहीं दिया जाता.संवेदना शून्य इस युग में संबंधों की औपचारिकता का उन्हें भान था और वह उसे आज़माकर तोड़ने या अपनी निराशा को बढ़ाने की स्थिति के पक्षधर नहीं थे. वह न उन्हें आज़माना चाहते थे और न उन्हें तोड़ना. जिन दो तीन मित्रों को अपना समझ कर उन्होंने सूचना दी थी उनमें से दो मित्र अपनी दिनचर्या से समय निकाल कर उनसे निरंतर संपर्क करते रहे. कुछ तीन दिन बाद तक भी उनसे मिलने के लिए समय नहीं निकाल पाए. उनके पुराने दिनों के साथी उसी दिन दौड़े चले आए. हर संभव मदद का भरोसा करने के आश्वासन के साथ. जैसा कि इस तरह के प्रसंगों में होता है ,जो भी मिलता है ,हर घटनाक्रम को सविस्तार सुनना चाहता है. मानवीय प्रवृत्ति भी है. जिज्ञासा व उत्कंठा भी व्यक्ति को चैन से नहीं रहने देती. प्रश्न अलग-अलग शब्दों में, टुकड़ों में होते थे किंतु उनके उत्तर एक जैसे थे. सुरेन्द्र भी धीरे धीरे अभ्यस्त होते जा रहे थे. इतनी बार दोहराने के बाद जुबान पर शब्द रट गये थे. बार-बार आने वाले फोन पर भी वही कुछ कहना होता था.

दिनचर्या अस्त-व्यस्त थी .सुबह नाश्ता करने बैठते तो किसी का फोन, लंच करते समय फिर किसी का फोन, रात खाना खाते समय भी बार बार किसी न किसी के फोन. दो तीन दिन उन्हें असुविधा महसूस हुई . फिर उसे अपने और अपने मरीज के प्रति उनका अनुराग जानकर वह सहज महसूस करने लगे. अब उनका ध्यान भोजन पर उतना नहीं रहता था जितना कि सामने वालों के संवादों की ओर. संवादों के आदान-प्रदान में सबकी उत्सुकता यही रहती थी कि उसका क्या हाल है? कितना सुधार है? कितने दिन और लगेंगे? डॉक्टर क्या कह रहे है? छुट्टी कब होगी?परदे की पीछे की बात यही होती थी कि बचेगी या नहीं ?बच भी जाएगी तो उसकी हालत क्या रहेगी? आगे बिस्तर पर पड़ी रहेगी या चलने-फिरने लायक हो पायेगी? जिन्दगी भर बिस्तर पर ही तो नहीं पड़ी रहेगी ? वह खुद किसी अनुमान या निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए थे .ऐसी स्थिति में किसी से कहते भी तो क्या? सुरेन्द्र किसी को यह नहीं समझा पाते थे कि डॉक्टर एक नहीं अनेक हैं, सब अपना काम कर रहे हैं. सबसे उनकी रोज़ बातचीत नहीं हो पाती. कब कौन डॉक्टर आई.सी.यू. में क्या निर्देश दे गया है इसकी भी जानकारी उन्हें नहीं होती. मरीज की हालत क्या है? कोमा में पड़ी रहेगी या चल फिर सकेगी , उन्हें खुद नहीं अनुमान था फिर किसी को बताते भी क्या? आई.सी.यू. में प्रवेश निषिद्ध था. निर्धारित समय पर एक व्यक्ति देख सकता था. उसमें भी बाहर से आने वालों को भेजना पड़ता था जो कि चिकित्सा पद्धति या दवाओं की जानकारी के मामले में काठ के उल्लू ही थे. सुरेन्द्र अंग्रेजी पढ़ लेते थे और अपने मित्र की दवा की दुकान पर दो साल बैठने से उन्हें दवाओं की जानकारी थी. वह भी डॉक्टरों से अधिक नर्सिंग स्टॉफ से ही अधिकांश जानकारी ले पाते थे. कुछ अपने ज्ञान से रोजाना की रिपोर्ट पढ़कर., कुछ अपने अनुमान से,कुछ मरीज की हालत देखकर. ईश्वर उनकी .ष्टि में मानव सभ्यता के विकास के लिए अति आवश्यक अपरिहार्य सामाजिक संकल्पना थी. लाखों वर्ष पुरानी पृथ्वी पर हजारों वर्ष पुरानी सभ्यता के विकास के प्रथम चरण में प्र.ति के कण कण से प्र.ति की हर हरकत और बदलाहट से भय खाते भयभीत मानव की अनेक गाथायें उन्होंने पढ़ी थीं. जलयात्रा में पानी का उफान या अति वर्षा के बाद बाढ़ आने से जल देवता की कल्पना, आंधी-तूफान का सामना होने पर वायु देवता के समक्ष नतमस्तक होना, बादलों की गड़ग़ड़ाहट ,उनकी भयंकर गर्जना और बिजली का चमकना पृथ्वी पर गिरना आदि घटनाओं से उपजा भय आकाश तत्व की स्वतंत्र सत्ता पर मुहर लगाना भर था. सूर्य जीवन देता था और धरती जीवन संचालित करने के लिये उपयुक्त स्थान. जीवन यापन के सभी संसाधन और उसकी सुरक्षा के लिए आदिमानव के निर्मित भय निरंतर अनेक देवी-देवताओं का सृजन करते रहे. आज भी सभ्य, सुशिक्षित, सुसंस्.त लोगों के जीवन में इनका प्रभाव देखा जा सकता है.

अंतरिक्ष विज्ञान की जानकारी और अनंत ब्रह्मण्डों की संभावनाओं ने उसे नवग्रहों को पूजने पर विवश किया. सभ्यता के विकास क्रम में स्थान देवता, ग्राम देवता, भी विकसित हुए और कुल देवता भी. गरूड़ देवता भी देव अर्चन में पूजा की घंटी पर प्रतीक चिन्ह बनकर सिमट गए. मंगल चिन्ह स्वस्तिक भी दिशा ज्ञान के उद्देश्य से भ्रमित होकर सामान्य जीवन का मंगल चिन्ह बनकर रह गया. अध्ययन पर आधारित उपजे विचारों की अनवरत श्रृंखला का क्रमभंग तब हुआ जब उनके मोबाइल की घंटी ने उन्हें यथार्थ के धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया. फोन उनके मित्र पंकज परिमल का था जो पिछले तीन-चार वर्षों से कदम-कदम पर उनका साथ दे रहे थे.आज भी उनके पीछे से वही उनके हर काम को देख रहे थे. बातचीत शुरू होते ही उन्होंने पहले औपचारिकतावश पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और उसके तुरंत बाद यथार्थवादी व उपयोगिता को प्रमाणित करने लगे.उन्होंने बताया कि मैरिज गार्डन के संबंध में एस.डी.एम. को चिट्ठी लिखने के लिए तहसीलदार साहब दस हजार रुपये मांग रहे थे. आपके वकील वीरेन्द्र व्यावकुल के माध्यम से सात हजार में डन कर दिया है. उन्हें पैसे देकर लेटर एस.डी.एम. ऑफिस में आवक करा दिया है. यहां पर एस.डी.एम. के रीडर प्रत्युत्तर में अनुमति पत्र देने के पांच हजार रुपये मांग रहे हैं .उनके बाद तहसीलदार साहब का रीडर अनुमति पत्र बनाने के तीन हजार रुपये लेगा. क्या करना है?

-पैसे की बात तो ठीक है पर ताले कब खुलेंगे?

-आप हां कर दें. ताले खुलने की चिंता न करें? पैसों का काम पैसों से होता है सब हो जाएगा आप कहें तो मामला निबटा दूं.

सुरेन्द्र इन दिनों हर जगह पैसे को पानी की तरह बहते देख रहे थे.परिस्थितियां मानसिक रूप से प्रभावित कर रही थीं. उन्होंने पीछा छुड़ाने के लिए कह दिया- जो जैसे निबटे, निबटा दो. मैं आकर हिसाब कर दूंगा. सुरेन्द्र अच्छी तरह जानते थे कि प्रशासन और विशेष कर राजस्व विभाग के कर्मचारी पैसा पीटने के लिए कोई भी कदम उठा सकते हैं. एक ओर वह आपको कानून कायदों के सैकड़ों जालों में उलझा सकते हैं तो दूसरी ओर उन जालों को काटने के लिए सामने वाले को नई नई तरकीबें सुझा सकते हैं. सुरेन्द्र शासकीय अधिकारियों-कर्मचारियों को बरसों से घर चलाने में मदद कर रहे थे इसलिए पैसे की उन्हें अधिक चिंता नहीं थी .उन्होंने अपने मित्र को फ्री हैंड कर दिया.पैसा फेंको तमाशा देखो की स्टाइल में,अपने हिस्से के हर काम को निबटाने के लिए.

डॉ. महेन्द्र अग्रवाल, स. नई गज़ल सदर बाजार शिवपुरी म.प्र. 473551, मो.9407511924

शिक्षक दिवस पर समाज के प्रतिभाशाली शिक्षक शिक्षिकाओं का सम्मान करेगा ब्राह्मण समाज

महिदपुर।जवाहर डोसी पीयूष। आगामी शिक्षक दिवस पर गुर्जर गौड ब्राह्मण समाज मंदसौर में शिक्षक दिवस पर एक कार्यक्रम आयोजित कर समाज के पूरे प्रदेश में विभिन्न शासकीय विद्यालयों में सदस्य शिक्षक शिक्षिकाओं का सम्मान करेगा। इसकी रूपरेखा को लेकर रविवार को मंदसौर में जिला गुर्जर गौड ब्राह्मण महिला सभा मंदसौर और प्रांतीय महिला महासभा की बैठक समाज की महिला सभा प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष प्रीति अनिल पुरोहित की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रांतीय महिला महासभा एवं जिला महिला सभा अध्यक्ष दीपिका पांडे, जिला गुर्जर गौड ब्राह्मण महिला सभा की महामंत्री अर्चना राजोरा, जिला गुर्जर गौड ब्राह्मण सभा मंदसौर के जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा एडवोकेट, ओमप्रकाश शर्मा, गोविंद जोशी, प्रेम शर्मा, राकेश शर्मा एडवोकेट, अजय तिवारी, अनिल पुरोहित, अनिल

त्रिवेदी, स्वाति तिवारी ने अपने विचार रखे।कार्यक्रम में अजय पांडे, लोकेश तिवारी, राजेश व्यास, सुरेश दुबे, नितिन राजोरा, डाक्टर दिनेश तिवारी रसेन्द्र शर्मा, यशोधर्मन शर्मा, सीमा जोशी सुधा शर्मा सुनीता शर्मा, ज्योत्सना शर्मा, ज्योत्सना तिवारी, गीता व्यास, मधु दुबे, गीता शर्मा, मोनिका राकेश शर्मा, मोनिका रजनीश शर्मा, शारदा शर्मा, अनामिका श्रोत्रिय, मेघा त्रिवेदी यशोधरा व्यास उपस्थित रहे। संचालन दीपिका पांडे ने किया।आभार अजय पांडे ने माना।जानकारी समाज की योजना मंत्री मुक्तिका शर्मा तथा प्रचारमंत्री प्रतिभा तिवारी ने संयुक्त रूप से देते हुए बताया महिदपुर क्षेत्र के विभिन्न शासकीय विद्यालयों में भी समाज के शिक्षक शिक्षिका सेवारत हैं जिन्हें इस समाज के इस आयोजन में शामिल होने के लिये प्रेरित किया जायेगा। गत वर्ष श्रेष्ठ शिक्षक शिक्षिका सम्मान चयन समिति में समाज की प्रदेश महिला सभा की सांस्कृतिक मंत्री शिक्षाविद हेमलता उपाध्याय श्रेष्ठ शिक्षक शिक्षिका चयन समिति में शामिल थी।

एक महानगर का उदय

एक बड़ा शहर कैसे बनता है,यह अंदाज आज के उज्जैन को देखकर लगाया जा सकता है।जो लोग यह परिवर्तन अपनी आंखों से देख रहें हैं वह बहुत भाग्यशाली हैं।तो पहले हम समझते हैं कि किसका क्या है,और इसका एक छोटे से शहर का महानगर में परिवर्तित होने से क्या संबंध है,तो जब सरकार रोजगार सृजन के लिए सार्वजनिक निर्माण के कामों को तेज करती है,तब इससे हर हाथ को काम मिलना सुनिश्चित किया जाता है,हर हाथ को काम मतलब ज्यादा से ज्यादा काम करकर ज्यादा से ज्यादा धन को विभिन्न परियोजनाओं में लगाकर लोगों के हाथों में पहुंचाना,अब कुछ लोग सोचते हैं सरकार के पास पैसे की क्या कमी,सरकार चाहे तो हर व्यक्ति को हर महीने कुछ हजार रुपए,बिना किसी काम के यूं ही दे सकती है,लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि सरकार यह कर तो सकती है और छोटी मात्रा में कर भी रही है,लेकिन हर हाथ में बिना कोई काम करवायें धन देने मात्र से,न तो गरीबी दूर होगी,न ही विकास होगा और तब न ही रोजगार का स्थाई जरिया बनेगा,क्योंकि बिना काम हर हाथ यदि ज्यादा धन आया तो मंहगाई बढ़ना निश्चित है,क्योंकि मार्केट में यदि धन ज्यादा बढ़ा और वस्तुएं नहीं बढ़ी,तो मुद्रास्फीति बढ़ेगी ही,क्योंकि तब हर आदमी हजारों रुपए लेकर मार्केट जायेगा और उसे खरीदने के लिए वस्तु नहीं मिलेगी,जबकि उसके हाथ में पैसा उपलब्ध होगा।

तो इसी परिक्षेप में अब हम बात करते हैं उज्जैन के विकास की,तो मेरे जैसे लोग जिनकी उम्र साठ साल के आसपास है और जो विगत तीस चालीस सालों से उज्जैन में रहते हुए उज्जैन शहर को देख रहे है,तो वह जानतें हैं कि यह एक छोटा, प्यारा,शांत शहर कहलाता था अभी कुछ सालों पहले तक,जो किसी रिटायर व्यक्ति के लिए एकदम उपयुक्त जगह थी रहने के लिए, क्योंकि बाबा महाकाल की सेवा और इंदौर जैसे महानगर का सानिध्य,दोनों यहां मिल रहा था,तो और क्या चाहिए व्यक्ति को।और जैसा कि हम सब लोग जानते हैं कि कुछ सालों पहले तक, एक छोटे शहर के लिए विकास का मतलब होता था कि,एक-दो नये टाकीज खुल जाना,थोड़ी बहुत नयी दुकानें ब्रांडेड कपड़ों की खुल जाना, कुछ नये रेस्टोरेंट बन जाना,नये कालेज बन जाना, एक आध नया अस्पताल,कुछ नयी कालोनी और एक दो पुल,बस हो गया शहर का विकास और कमोबेश यही स्थिति,हमारे उज्जैन शहर की भी थी।

लेकिन विकास और अत्यधिक तेज विकास कैसा होता है,वह अब हम देख रहे हैं आज उज्जैन शहर के चारों तरफ चौड़े चौड़े फोरलेन कारिडोर विकसित हो रहे हैं,नये नये इंडस्ट्रियल पार्क बन रहें हैं,जहां बड़ी बड़ी नामी गिरामी कंपनियां अपनी फेक्ट्रियां खोल रही हैं एवं खोल चुकी हैं।इसी तरह एक नया आई टी पार्क और नियमित उड़ान वाला हवाई अड्डा बन रहा है।साथ में एक सुव्यवस्थित हेलीपेड चार हेलीकॉप्टर उतरने की सुविधा के साथ बन रहा है।वर्षों आगे की जनसंख्या और उसकी मांग को ध्यान में रखकर बांध और तालाब बनाए जा रहे हैं और उसके लिए बड़ी बड़ी पाइप लाइन डाली जा रही हैं।मोक्षदायिनी शिप्रा नदी का शुद्धिकरण करने के लिए कान्ह डायवर्सन योजना पर काम चल रहा है।दर्जनों ब्रिज एवं अंडर पास और एलीवेटेड कारिडोर पर काम जारी है।एक प्राइवेट मेडिकल कॉलेज के साथ दूसरा शासकीय मेडिकल कॉलेज मेडीसिटी के रूप में विकसित हो रहा है जिसके लिए बहुत भव्य, बहुमंजिला इमारतों का निर्माण हो रहा है।सभी प्रमुख मार्गों का चौड़ीकरण एवं चौराहों का विकास हो रहा है।बड़े बड़े रूफ्स के होटलों का निर्माण हो रहा है।दूर दूर तक कालोनियों का निर्माण चल रहा है।एक बहुत बड़ा चिड़ियाघर भी प्रस्तावित है साथ ही एक सुंदर संग्रहालय का काम भी जारी है।शहर के विद्युत प्रदाय को भी सिंहस्थ जैसे बड़े आयोजनों के लिए उन्नत किया जा रहा है। रेलवे की सुविधाओं को बेहतर किया जा रहा है नये स्टेशन और प्लेटफार्मों एवं नये रेलवे ब्रिज पर काम जारी है।इंदौर उज्जैन के बीच मेट्रो रेल परियोजना भी विचाराधीन है।तो इस तरह से हम देखें तो एक नया बड़ा शहर कैसे बनता है यह आज उज्जैन शहर में रहकर महसूस किया जा सकता है, और इस तरह इससे हजारों की संख्या में रोजगारों का सृजन हो रहा है, बड़ी संख्या में बड़ी बड़ी कंपनियों के कामों के लिए तकनीकी स्टाफ, इंजीनियर, मजदूर, ठेकेदार शहर में आकर काम कर रहे हैं।इसके साथ ही लाखों की संख्या में बाबा महाकाल के दर्शन के लिए आने वाले भक्तों के कारण शहर के लोगों को होटल इंडस्ट्री, आवागमन आदि अनेक अन्य क्षेत्रों में रोजगार के भरपूर मौके उपलब्ध हो रहें हैं।इस रोजगारपरक विकास की सबसे बड़ी खूबी यह है, कि सारे विकास कार्य समयबद्ध तरीके से चलाए जा रहे हैं, जिनका अगले वर्ष के अंत तक पूरा होना सुनिश्चित किया गया है। जब वर्ष 2028 में उज्जैन में सिंहस्थ का आयोजन होगा तो देश वासियों को एक नया, सुंदर, चमचमाता शहर देखने को मिलेगा, जहां पर धार्मिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक धाराएं एक त्रिवेणी बनकर, लाखों करोड़ों दर्शनार्थियों का मन मोह लेंगी।

प्रफुल्ल शुक्ला सरकार, उज्जैन

जीवन में आपकी पहचान चरित्र और सद्कर्मों से हो

जीवन में ऐसा चरित्र बनाइए कि आपकी पहचान आपके नाम से नहीं, आपके सद्कर्मों से हो। प्रभु श्रीराम सिखाते हैं– सत्य को कभी मत छोड़ो, कर्तव्य से कभी मत भागो, विनम्रता को कभी मत खोओ, और किसी के साथ अन्याय मत करो। समय हर किसी की परीक्षा लेता है, लेकिन जो व्यक्ति धर्म, धैर्य और सत्य पर अडिग रहता है, वही अंत में सम्मान और विजय प्राप्त करता है।

रामायण का सबसे बड़ा संदेश है— अपने भीतर ऐसी ज्योति जलाओ कि अज्ञान, क्रोध, लोभ और अहंकार का अंधकार स्वयं मिट जाए। यही श्रीराम के आदर्शों पर चलने का सच्चा मार्ग है। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं। **जय जगद्गुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।**

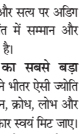

(गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज), श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान।

क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन ने खरीफ 2026 के लिए छह नेक्स्ट-जेनरेशन इनोवेशन पेश किए

क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लिमिटेड ने आज खरीफ 2026 सीज़न के लिए छह नेक्स्ट-जेनरेशन इनोवेशन लॉन्च करने की घोषणा की। बदलते कीड़ों के दबाव, मौसम के बदलते पैटर्न और बीमारियों के बदलते डायनामिक्स को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया गया यह नया पोर्टफोलियो, बहुत ज़्यादा रिसर्च, फ़ील्ड की कड़ी जांच और किसान-केंद्रित प्रोडक्ट डेवलपमेंट के ज़रिए बनाया गया है। ये लॉन्च, साइंस-समर्थित इनोवेशन के ज़रिए किसानों को फ़ायदेमंद खेत बनाने में मदद करने के क्रिस्टल के कमिटमेंट को और पक्का करते हैं।

सोयाबीन हर्बिसाइड सेगमेंट में अपनी नेतृत्व को मज़बूत करने के लिए, क्रिस्टल ने सोयाबीन के लिए समोरियन पेश किया है, जिसमें घास और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के खिलाफ़ पेटेंटेड तीन-तरफ़ा एक्शन मोड है। मक्के में खरपतवार की मुश्किल चुनौतियों को देखते हुए, क्रिस्टल ने अपना पेटेंटेड कॉम्बिनेशन हर्बिसाइड टाकुरो भी लॉन्च किया है, जो तेज़ सिस्टमिक एक्शन और लंबे समय तक चलने वाले बचे हुए कंट्रोल के साथ तीन-लेयर वाला खरपतवार मैनेजमेंट देता है। ये टेक्नोलॉजी मिलकर खरपतवार के मुकाबले को कम करने और फसल को मज़बूती से लगाने में मदद करती हैं। अपने धान के फंगीसाइड पोर्टफोलियो को मज़बूत करते हुए, क्रिस्टल ने ज़ेबेरिया पेश

किया, जो फंगल और बैक्टीरियल बीमारियों से कई जगहों पर सुरक्षा देता है, साथ ही डुअल-एक्शन फंगीसाइड मैक्सेंट्रा भी पेश किया, जो कई फसल स्टेज में बड़े पैमाने पर बीमारी पर कंट्रोल करता है। ये सब मिलकर, ज़्यादा सेहतमंद फसलों, बेहतर अनाज की क्वालिटी और ज़्यादा पैदावार के लिए बीमारी मैनेजमेंट की एक पूरी स्ट्रेटेजी देते हैं।

कॉटन चूसने वाले कीड़ों के सेगमेंट में अपनी लीडरशिप को और मज़बूत करते हुए, क्रिस्टल ने वाल्ट्रूस्या पेश किया है, जो स्मार्ट ट्रिपल एक्शन टेक्नोलॉजी से चलने वाला एक एडवांस्ड कॉटन इंसेक्टिसाइड है। प्रोक्लेम एक्स्ट्रा और जिवोरा जैसे भरोसेमंद ब्रांड्स की सफलता के आधार पर, वाल्ट्रूस्या बड़े चूसने वाले कीड़ों पर तेज़ी से असर डालता है, बड़े पैमाने पर कंट्रोल करता है और बची हुई चीज़ों से ज़्यादा सुरक्षा देता है। स्प्रे की फ्रीक्वेंसी कम करके और पूरे मौसम में फसल की सुरक्षा पक्का करके, यह इनोवेशन कॉटन उगाने वालों को ऑपरेशनल एफिशिएंसी सुधारने, पैदावार बचाने और खेती की प्रोडक्टिविटी को ज़्यादा से ज़्यादा करने में मदद करता है। क्रिस्टल ने अपने GreenAg पेटेंटेड ऑर्गेनिक स्मार्ट न्यूट्रिशन सॉल्यूशन KGR-T के लॉन्च की भी घोषणा की, जो इफवेसेंट टैबलेट डिलीवरी सिस्टम (ETDS) और एक्सटेंडेड न्यूट्रिएंट रिलीज़ (ENR) टेक्नोलॉजी से चलता है। यह न्यूट्रिएंट्स के इस्तेमाल की क्षमता को बेहतर बनाता है, फूल और फल लगने को बढ़ाता है, फसल की मज़बूती बढ़ाता है और बेहतर क्वालिटी की पैदावार में मदद करता है। क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर अंकुर अग्रवाल ने कहा, भारतीय खेती तेज़ी से बदल रही है। मौसम की अनिश्चितता, बदलते कीट और हर एकड़ से बढ़ती उम्मीदें खेती में नए इनोवेशन की नई पीढ़ी की मांग करती हैं। क्रिस्टल में, हमारा मानना है कि इनोवेशन को किसानों के खेत में असली चुनौतियों का हल निकालना चाहिए, साथ ही यह प्रैक्टिकल, आसानी से मिलने वाला और सस्ता भी होना चाहिए। ये छह टेक्नोलॉजी किसानों को प्रोडक्टिविटी, प्रॉफिट और लंबे समय तक चलने वाली सस्टेनेबिलिटी को बेहतर बनाने में मदद करने के हमारे कमिटमेंट को दिखाती हैं। ये छह इनोवेशन मिलकर, बीमारी, खरपतवार, कीड़े और न्यूट्रिशन मैनेजमेंट के लिए इंटीग्रेटेड सॉल्यूशन देकर, खास फसल सेगमेंट में क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन की लीडरशिप को मज़बूत करते हैं। इससे किसानों को प्रोडक्टविटी बढ़ाने, खेती की लागत कम करने और प्रॉफिट बढ़ाने में मदद मिलती है।

अंतर्राष्ट्रीय जावा येज़दी दिवस ने अपना 24वां संस्करण मनाया

बेंगलुरु, अंतर्राष्ट्रीय जावा-येज़दी दिवस (आईजेवाईडी), जो कि दुनिया की सबसे पुरानी और राइडर्स के नेतृत्व वाली मोटरसाइकिल परंपराओं में से एक है, ने 12 जुलाई 2026 को अपना 24वां संस्करण मनाया। जावा और येज़दी के मालिकों के बीच एक जमीनी स्तर की पहल के रूप में शुरू हुआ यह कार्यक्रम अब एक वैश्विक आंदोलन का रूप ले चुका है। आज, यह मोटरसाइकिलिंग, विरासत और समुदाय के प्रति साझा प्रेम के माध्यम से विभिन्न पीढ़ियों के राइडर्स को एक साथ लाता है।

हर साल जुलाई के दूसरे रविवार को मनाया जाने वाला आईजेवाईडी, एक छोटे से मालिक-संचालित प्रयास से बढ़कर एक ऐसी वैश्विक परंपरा बन गया है जिसे विभिन्न पीढ़ियों के राइडर्स ने अपनाया है। दशकों का सफर तय कर चुकीं विंटेज जावा और येज़दी मोटरसाइकिलें आज भी आधुनिक जावा और येज़दी मोटरसाइकिलों के साथ सड़कें साझा कर रही हैं। वे सभी राइडिंग के प्रति एक साझा जुनून से जुड़े हुए हैं। इस साल, इस उत्सव ने भारत के 150 से अधिक शहरों में 7,500 से ज़्यादा राइडर्स और 40 से अधिक उत्साही कम्युनिटीज़ को एक साथ

लाया। सीमाओं से परे, यह आंदोलन 11 देशों तक पहुंचा, जहां राइडर्स ने स्थानीय राइड्स, सामुदायिक समारोहों और डिजिटल भागीदारी के माध्यम से इस अवसर को मनाया। सभी राइडर्स ने मिलकर न केवल प्रतिष्ठित मोटरसाइकिलों का जश्न मनाया, बल्कि उन दोस्ती, यादों और कहानियों का भी जश्न मनाया जिन्होंने पीढ़ियों से जावा-येज़दी की भावना को जीवित रखा है। इस आयोजन के वैश्विक स्वरूप को और मज़बूत करते हुए, दुनिया भर के जावा समुदायों ने एक साझा पहचान के तहत भारत भर के राइडिंग क्लबों के साथ हाथ मिलाया। इसने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के उत्सवों को जोड़ने और एक साझा वैश्विक कहानी बनाने में मदद की। इस वर्ष के उत्सव के बड़े पैमाने को देश भर के 40 से अधिक जावा-येज़दी राइडर क्लबों के साथ-साथ डीलरशिप और स्वतंत्र उत्साही समुदायों के सामूहिक प्रयासों से संभव बनाया गया। सबने मिलकर एक ऐसा उत्सव तैयार करने में मदद की जो राइडर्स द्वारा, राइडर्स के लिए ही बना हुआ है।